आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:15-12-14

हम बच्चों को ईश्वरीय श्रीमत् पर चलना सिखलाकर, हमें बेफिक्र बादशाह बनाने वाले, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - कदम-कदम श्रीमत् पर चलना यही हाइएस्ट चार्ट है, जिन बच्चों को श्रीमत् का रिगार्ड है वह मुरली जरूर पढ़ेंगे.

इस अमूल्य ब्राह्मण जीवन में बाबा ने हमें हर कदम के लिए श्रीमत् दी है उसमें मुख्य है - मनमनाभव, जिसका अर्थ है - स्वयं को आत्मा समझ मुझ परमात्मा-बाप को याद करों. कल की अव्यक्त मुरली में बाबा ने हमारी सारी दिनचर्या के, अमृतबेला से लेकर रात्रि के सोने तक कि सब श्रीमत् दी है. कैसे हर कर्म करते, सर्व सम्बन्धों से एक बाप का साथ और याद सहज रुप से रह सकती है.

आज की मुरली से बाबा ने कहे कुछ महा-वाक्यों को बाबा ड़ायरेक्ट मुझे ही कह रहे है इसी भाव में रहकर पढ़ेंगे.

- बाबा कहते है बच्चों की बुद्धि में यह जरूर होगा कि बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है और सुप्रीम गुरु भी है. तुम जानते हो यह बात बाप के सिवाय और कोई सिखला न सके. कल्प-कल्प बाप ही आकर यह तुम्हें सिखलाते हैं. वह ज्ञान सागर, पतित-पावन है. उनसे ही तुम्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र दिव्य बुद्धि मिली है.
- बाबा कहते है यह ईश्वरीय पढ़ाई है. ऐसे मनुष्य की पढ़ाई कभी हो न सके. भल देवताओं की महिमा की जाती है फिर भी ऊंच ते ऊंच है एक बाप.
- बाबा तो सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो स्वर्ग के मालिक बनो, इसमें बाप भी आ गया, पढ़ा ने वाला भी आ गया. सद्गति दाता भी आ गया.
- बाबा कहते है यह बाप तो सबको एक ही महामंत्र देते हैं मनमनाभव. बस. बाप ही एक पतित-पावन है, उनकी ही याद से हम पावन बनेंगे. वह तुम बच्चों के हाथ में है, जितना याद करेंगे उतना पावन बनेंगे. सारा मदार हर एक के पुरुषार्थ पर है.

- बाबा कहते है अभी तुम्हारी है याद की यात्रा. अक्षर ही एक है - मनमनाभव. यह यात्रा तुम्हारी अनादि है. अभी तुम ज्ञान सहित कहते हो कि हम कल्प-कल्प यह यात्रा करते हैं. यह यात्रा खुद बाप आकर सिखलाते हैं.

- बाबा कहते है यह यात्रा है डेड साइलेन्स की. एक बाप को ही याद करना है, इससे ही पावन बनना है. तुम्हें बाप ने यह सच्ची-सच्ची रुहानी यात्रा सिखलाई है.

- बाबा कहते है यह तो तुम मीठे-मीठे बच्चे जानते हो हम बाप से श्रीमत् लेकर भारत को फिर से स्वर्ग बना रहे हैं. उस समय (स्वर्ग में) भारत में और कोई होता ही नहीं. सारा विश्व पवित्र बन जाता है. बाप ही तुम्हें सारे झाड़ की नॉलेज सुनाते हैं. तुम्हें फिर से स्मृति दिलाते हैं. तुम सो देवता थे फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बने. अभी तुम ब्राह्मण बने हो. यह जो हम सो का मंत्र है सदा बुद्धि में रहना चाहिए, इसे ही तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे. भारत का ही उत्थान और भारत का ही पतन गाया हुआ है.

- बाबा कहते है तुम बच्चों को मालूम है कि एक बाप बीजरूप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है. वह इस सृष्टि चक्र में नहीं आते हैं. वह बाप ही तुम्हें आपसमान नॉलेजफुल बनाते हैं.

- बाबा कहते है अभी बाप से पढ़ कर जो पद चाहो वह ले लो. जितना बाप को याद करेंगे, दूसरों की सर्विस करेंगे, उतना ही फल मिलेगा.

- बाबा कहते है बाबा की याद में हो तो स्वर्ग से भी यहाँ जास्ती राजी हो. जबकि स्वर्ग की बादशाही देने वाला बाप मिला है. तुम्हें कितना लायक बनाते है, फिर तुम्हें क्या परवाह है. परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले बाप की, अब वह मिल गया, अब क्या परवाह. ईश्वर के बच्चों को किस चीज की परवाह. तुम जानते हो बाबा हमको पढ़ा रहे हैं. बाबा हमारा टीचर, सतगुरु भी है.

- बाबा कहते है अभी तुम यह संगमयुग पर पहुँचे हो. तुम जानते हो कल्प-कल्प बाप आते हैं तुम्हें पढ़ा ने. बाबा के पास तुम रहते हो ना. यही तुम्हारा सच्चा-सच्चा सतगुरु है, जो तुम्हें मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं.

ॐ शांति.